Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयो की सह–शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन।

सुमन
पीएचडी, शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर।

डा. विनोद कुमार उपाध्याय
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर।

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 90-111

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 05 April 2025
Published : 20 April 2025

सार संक्षेप– सह–शैक्षिक क्रियाएँ का विषय विद्यार्थियों के साथ बातचीत का संगठन है, जिसका उद्देश्य विकास के आधार और स्थिति के रूप में सामाजिक–सांस्कृतिक अनुभव में महारत हासिल करना है। सह–शैक्षिक क्रियाएँ के साधन हैं: सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान, जिसके आधार पर बच्चों की शिक्षा और परवरिश की जाती है सह–शैक्षिक क्रियाएँ में सामाजिक व्यवहार और बातचीत के अनुभव को स्थानांतरित करने के तरीके स्पष्टीकरण, प्रदर्शन, अवलोकन, खेल, संयुक्त कार्य हैं। सह–शैक्षिक क्रियाएँ बच्चे के व्यक्तित्व के व्यापक विकास के उद्देश्य से अधिक प्रभावी होगी यदि इसे बच्चे और शिक्षक की प्रकृति, संस्कृति के अनुसार बनाया जाए। सह–शैक्षिक क्रियाएँ के दौरान, शिक्षक और बच्चे के बीच एक विशेष संचार उत्पन्न होता है, जिसमें प्रतिभागी दुनिया के बारे में अपने स्वयं के दृ ष्टिकोण को महसूस करते हैं। शिक्षक और बच्चे के बीच संस्कृतियों के संवाद के संदर्भ में सह–शैक्षिक क्रियाओ का कार्य दो गुना है: एक तरफ, बच्चे के सोचने के तरीके, स्थिति, विश्वदृष्टि को मजबूत और विकसित करनाय दूसरी ओर, एक अलग संस्कृति (एक वयस्क) के साथ बातचीत का आयोजन करें। सह–शैक्षिक क्रियाओ के माध्यम से बालको का सर्वागींण विकास किया जा सकता हैं।

मुख्य शब्द– सह–शैक्षिक क्रियाए, विद्यालय।

प्रस्तावना– शिक्षा द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है। और यह मनुष्य के पूर्ण विकास में सहायक है। शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र ही नहीं है बल्कि जीवन यापन की प्रक्रिया भी है। मानव तो विवेकशील है, बल्कि उसमें मानवीय गुणों के विकास की आवश्यकता हैं और इसके लिए शिक्षा मनुष्य को इस तरह की क्षमता प्रदान करती है कि वह पूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। इस प्रकार शिक्षा का मानव जीवन में विशिष्ट योगदान है। है। जो देश में श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण कर सके, व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध हो सकें, ज्ञान प्राप्ति, आत्मनिर्भरता प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकें, चारित्रिक विकास, शारीरिक विकास और नैतिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकें अर्थात् शिक्षा बालक का सर्वांगीण कर सुयोग्य नागरिक बनाने में सहायक हैं।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

स्कूल में प्रतिवर्ष स्कूल खुलने पर नये चुलबुले बालकों का समूह आता है। उनमें से अधिकांश की आयु तीन और चार वर्षों के बीच होती है और स्कूल का यह उनका पहला अनुभव होता है। वे स्कूल की नई दुनिया से सर्वथा अपरिचित होते हैं। विद्यालय के सीमित परिसर में सीमित कक्षाओं में पाठ्यक्रम की जटिलता को झेलता हुआ बालक केवल एकांगी शिक्षा प्राप्त करता है। इसलिए शिक्षेतर विधियों में इन कार्यक्रमों का भी पढ़ाई के साथ–साथ बराबर महत्व है। इन सहगामी क्रियाओं में भाग लेकर बालक अपने व्यक्तित्व को और संवार सकता है, भावी जीवन की नींव स्वरूप जिस आत्मविश्वास, अनुशासनबद्धता तथा हर परिस्थिति में अपने को ढालने की योग्यता आवश्यक है, उसको सीखने के लिए विद्यालय में अवसर मिलता है। प्रत्येक बच्चे में कोई न कोई गुण अवश्य होता है। इसलिए प्रत्येक अध्यापक तथा माता–पिता को यह चाहिये कि बच्चे को इस प्रकार का वातावरण प्रदान करें जिससे उसकी प्रतिभा को एक नई सकारात्मक दिशा मिले। भावी जीवन में उसकी यही प्रतिभा उसे एक सफल व्यक्तित्व प्रदान करेगी। सह–शैक्षिक गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायता करना है ताकि वह जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के लिए विद्यालय में समुचित प्रशिक्षण प्राप्त कर ले। विद्यार्थी के जिस पक्ष का विकास कक्षा कार्य से संभव नहीं होता, वह इन अतिरिक्त सह–शैक्षिक गतिविधियों द्वारा संपन्न होता है। सह–शैक्षिक गतिविधियों की सफलता के लिए आवश्यक है कि वे अध्यापक की कमी को पूरा करते हुए, जीवन की शिक्षा प्रदान करे, विद्यालयों द्वारा आयोजित हो तथा विद्यार्थियों की विभिन्न रुचियों के अनुकूल हो तथा शिक्षा की पूर्णता के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो। सहगामी क्रियाओं से बालक बिना किसी तनाव अथवा दबाव के सीखता है और फिर यही कच्ची मिट्टी–सा कोमल मन वाला बालक अपने अनुभवों से सीखता हुआ कब एक बड़ा शिल्पकार, अध्यापक, इंजीनियर अथवा कलाकार बन जाता है, पता ही नहीं चलता। केवल सूचनाओं का संग्रह करके आज कोई बुद्धिमान नहीं बन सकता। इसके लिए सतर्कता, सजगता तथा संवेदनशीलता की आवश्यकता है, जिनका विकास ये शैक्षिक सहगामी क्रियायें करती हैं। इसलिए हर शिक्षक को बच्चे की शिक्षा में इनका महत्व समझ कर प्रेरणा देनी चाहिए जिससे बच्चा व्यस्त रहे तथा एक स्वस्थ सोच लेकर उन सभी असामाजिक तत्वों से, प्रतिकूल वातावरण से अपने को दूर रखता हुआ एक सुंदर समाज के निर्माण में सहायक हो और स्वयं एक आदर्श नागरिक बने। जैसे आस–पड़ोस के अध्ययन के लिये शिक्षक और बच्चों को विशेष प्रकार की तैयारी करने की आवश्यकता होती है। बच्चों को बिना तैयारी के शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाना निरर्थक होता है, क्योंकि भ्रमण पर ले जाने का अभिप्राय केवल मनोरंजन ही नहीं है। शिक्षक को चाहिए कि भ्रमण की एक रूपरेखा बनाए। शिक्षक का क्या दायित्व होगा? बच्चे क्या करेंगे? कौन लेखा रखेगा? किससे बात की जाएगी? क्या प्रश्न पूछे जाएंगे? कक्षा में लौटने पर इस संबंध में क्या क्रियाएं होंगी? इस भ्रमण का पाठ के लिये किस प्रकार प्रयोग होगा? इन सभी बातों पर शिक्षक को पहले चिंतन करना चाहिए। बच्चों से भी इस संबंध में बातचीत करके उन्हें प्रोत्साहन दिया जा सकता है। ऐसा करने पर बच्चे स्वयं को इस सारी प्रक्रिया में भागीदार समझेंगे और उन्हें इस भ्रमण के उद्देश्य स्पष्ट हो जाएंगे।

''सह–शैक्षिक गतिविधि'' की अवधारणा की व्याख्या में किसी भी प्रकार की गतिविधि की सामग्री का विश्लेषण उसके मनोवैज्ञानिक आधार की उपस्थिति को इंगित करता है, क्योंकि किसी गतिविधि की मुख्य विशेषताओं को निष्पक्षता माना जाता है – यह सीधे (किसी भी सामग्री या आदर्श वस्तु), और व्यक्तिपरकता से संबंधित है, क्योंकि यह है एक विशिष्ट व्यक्ति द्वारा किया जाता है। गतिविधि की अवधारणा आधुनिक मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र में प्रमुख अवधारणाओं में से एक है। मनोविज्ञान गतिविधि के व्यक्तिपरक पहलू की पड़ताल करता है।जाहिर है, सह–शैक्षिक क्रियाएँ वो गतिविधियों है,जो सार्वजनिक या निजी शैक्षणिक और शैक्षणिक संस्थानों

में समान रूप से की जाती है और इसे करने वाले व्यक्तियों की पेशेवर क्षमता की आवश्यकता होती है, उनकी विशेष शिक्षा का एक निश्चित स्तर। सह–शैक्षिक क्रियाएँ शिक्षक का एक उद्देश्यपूर्ण, प्रेरित प्रभाव है, जो बच्चे के व्यक्तित्व के व्यापक विकास और उसे आधुनिक सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में जीवन के लिए तैयार करने पर केंद्रित है।

सह–शैक्षिक क्रियाएँ की प्रकृति और सामग्री उसके विषय, उद्देश्यों, उद्देश्य, साधन और परिणाम से निर्धारित होती है। सह–शैक्षिक क्रियाएँ का उद्देश्य शिक्षा की वस्तु और विषय के रूप में बच्चे के विकास की संभावनाओं के कार्यान्वयन के लिए स्थितियां बनाना है। इस लक्ष्य का कार्यान्वयन सह–शैक्षिक क्रियाएँ का परिणाम है, जिसका निदान शैक्षणिक प्रभाव की शुरुआत में और इसके पूरा होने पर बच्चे के व्यक्तित्व के गुणों की तुलना करके किया जाता है।

सह–शैक्षिक क्रियाएँ में, बाहरी और आंतरिक दोनों उद्देश्यों को प्रतिष्ठित किया जाता है। बाहरी लोगों में व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के उद्देश्य शामिल हैं, जबकि आंतरिक लोगों में प्रभुत्व, मानवतावादी और सामाजिक–समर्थक अभिविन्यास शामिल हैं।

शिक्षक की जरूरतों का ज्ञान, सामाजिक विकास में रुझान, किसी व्यक्ति के लिए बुनियादी आवश्यकता एंव वैज्ञानिक ज्ञान, कौशल और क्षमता, उत्पादन, संस्कृति, सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में मानव जाति द्वारा संचित अनुभव की नींव, जो एक सामान्यीकृत रूप में युवा पीढ़ियों को प्रेषित होती है।

सह–शैक्षिक क्रियाएँ बच्चे के व्यक्तित्व के व्यापक विकास के उद्देश्य से अधिक प्रभावी होगी यदि इसे बच्चे और शिक्षक की प्रकृति, संस्कृति के अनुसार बनाया जाए। सह–शैक्षिक क्रियाएँ के दौरान, शिक्षक और बच्चे के बीच एक विशेष संचार उत्पन्न होता है, जिसमें प्रतिभागी दुनिया के बारे में अपने स्वयं के दृष्टिकोण को महसूस करते हैं। शिक्षक और बच्चे के बीच संस्कृतियों के संवाद के संदर्भ में सह–शैक्षिक क्रियाओ का कार्य दो गुना हैः एक तरफ, बच्चे के सोचने के तरीके, स्थिति, विश्वदृष्टि को मजबूत और विकसित करनाय दूसरी ओर, एक अलग संस्कृति (एक वयस्क) के साथ बातचीत का आयोजन करें।

शैक्षणिक विज्ञान में, शिक्षक और बच्चे के बीच दो प्रकार की बातचीत होती हैः विषय–वस्तु और विषय–विषय।विषय–वस्तु संबंध। शैक्षणिक गतिविधि में, विषय की भूमिका शिक्षक की होती है, और वस्तु की भूमिका छात्र (बच्चे) की होती है।

सह–शैक्षिक क्रिया के विषय के रूप में शिक्षक को लक्ष्य–निर्धारण, गतिविधि, शैक्षणिक आत्म–जागरूकता, आत्म–सम्मान की पर्याप्तता और दावों के स्तर आदि की विशेषता है। इस स्थिति में, बच्चा शिक्षक द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं और कार्यों के निष्पादक के रूप में कार्य करता है। एक उचित विषय–वस्तु बातचीत के साथ, बच्चों के सकारात्मक गुण बनते हैं और समेकित होते हैंः परिश्रम, अनुशासन, जिम्मेदारीय बच्चा ज्ञान प्राप्त करने के अनुभव को संचित करता है, प्रणाली में महारत हासिल करता है, क्रियाओं का क्रम। हालाँकि, जब तक बच्चा शैक्षणिक प्रक्रिया का उद्देश्य है, अर्थात। गतिविधि के लिए प्रेरणा लगातार शिक्षक से आएगी, बच्चे का संज्ञानात्मक विकास प्रभावी नहीं होगा। वह स्थिति जब पहल की अभिव्यक्ति की आवश्यकता नहीं होती है, स्वतंत्रता का प्रतिबंध अक्सर व्यक्तित्व के नकारात्मक पहलुओं का निर्माण करता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को एकतरफा तरीके से ''देखता है'', मुख्य रूप से व्यवहार के मानदंडों और संगठित गतिविधियों के नियमों के अनुपालन या गैर–अनुपालन के दृष्टिकोण से।

विषय–विषय संबंध बच्चों में सहयोग करने की क्षमता, पहल, रचनात्मकता और संघर्षों को रचनात्मक रूप से हल करने की क्षमता के विकास में योगदान करते हैं। विचार प्रक्रियाओं का सबसे जटिल कार्य, कल्पना

सक्रिय होती है, ज्ञान सक्रिय होता है, आवश्यक विधियों का चयन किया जाता है, विभिन्न कौशलों का परीक्षण किया जाता है। सभी गतिविधि बच्चे के लिए व्यक्तिगत महत्व प्राप्त करती है, गतिविधि और स्वतंत्रता की मूल्यवान अभिव्यक्तियाँ बनती हैं, जो विषय की स्थिति को लगातार मजबूत करने के साथ, उसके व्यक्तिगत गुण बन सकते हैं। विषय–विषय की बातचीत में शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अधिक व्यक्तिगत रूप से समझता है, इस तरह की बातचीत को व्यक्तित्व–उन्मुख कहा जाता है। एक व्यक्तित्व–उन्मुख शिक्षक अन्य लोगों और दुनिया के साथ संबंधों में अपने ''मैं'' को महसूस करने की क्षमता के विकास में अधिकतम योगदान देता है, अपने कार्यों को समझता है, दूसरों के लिए और खुद के लिए उनके परिणामों की भविष्यवाणी करता है। इस तरह की बातचीत में शैक्षणिक गतिविधि प्रकृति में संवादात्मक है।

शिक्षक और बच्चे के बीच बातचीत की प्रकृति सह–शैक्षिक गतिविधि की शैली निर्धारित करती है। ए.के. मार्कोव सह–शैक्षिक गतिविधि की लोकतांत्रिक, सत्तावादी और उदार शैलियों में अंतर करते हैं और उनका वर्णन इस प्रकार करते हैं।

सह–शैक्षिक गतिविधि की एक लोकतांत्रिक शैली के साथ, बच्चे को संचार और संज्ञानात्मक गतिविधि में एक समान भागीदार माना जाता है। शिक्षक निर्णय लेने में बच्चों को शामिल करता है, उनकी राय को ध्यान में रखता है, निर्णय की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता है, न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन, बल्कि व्यक्तिगत गुणों को भी ध्यान में रखता है। प्रभाव के तरीके कार्रवाई, सलाह, अनुरोध के लिए प्रेरणा हैं। बातचीत की लोकतांत्रिक शैली के शिक्षकों को अपने पेशे के साथ अधिक पेशेवर स्थिरता और संतुष्टि की विशेषता है। एक अधिनायकवादी शैली के साथ, बच्चे को शैक्षणिक प्रभाव की वस्तु के रूप में देखा जाता है, न कि एक समान साथी के रूप में। अकेले शिक्षक निर्णय लेता है, उन्हें प्रस्तुत आवश्यकताओं की पूर्ति पर सख्त नियंत्रण स्थापित करता है, स्थिति और बच्चे की राय को ध्यान में रखे बिना अपने अधिकारों का उपयोग करता है, उसके कार्यों को उचित नहीं ठहराता है। नतीजतन, बच्चे गतिविधि खो देते हैं या इसे केवल शिक्षक की अग्रणी भूमिका के साथ करते हैं, वे कम आत्मसम्मान, आक्रामकता दिखाते हैं। इस शैली के प्रभाव के मुख्य तरीके आदेश, शिक्षण हैं। शिक्षक को पेशे से कम संतुष्टि और पेशेवर अस्थिरता की विशेषता है। सह–शैक्षिक क्रियाएँ का परिणाम है, जिसका निदान शैक्षणिक प्रभाव की शुरुआत में और इसके पूरा होने पर बच्चे के सर्वांगींण विकास करना व उसे सुयोग्य नागरिक बनाना है।

शोध समस्या के चयन का औचित्य– अगर किसी भी देश का भविष्य देखना है, तो वहाँ के बच्चों को देखों, क्योंकि शिक्षित बालक ही कल का सुयोग्य नागरिक बनता है। इसके लिए यह सर्वप्रथम यह प्रयास किया जाना चाहिए कि ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जिससे कि बालक का शारीरिक, मानसिक, आध्यत्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी पक्षो का विकास हो, अर्थात बालक का सर्वागीण विकास हो सके इसके अन्तर्गत बालक परिवार, समाज, विद्यालय वातावरण का एवं विद्यालय द्वारा प्रदान की गई शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहता हैं। इसके लिए हमारे संविधान में सभी को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान रखा गया है। इस कार्य की पूर्ति के लिए राज्य व क्रेन्द्र सरकार द्वारा एवं निजी क्षेत्र विद्यालयो के द्वारा की जा रही है। जिसका लक्ष्य समाज के पिछड़े हुए तथा विकास की सुविधाओं से वंचित बच्चों का वास्तविक जीवन के मौलिक अनुभवों व प्रयोगों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु समेकित सामुदायिक विद्यालयों अधिगम विकसित करना तथा प्रचारित करना है। देश–विदेश में अनेक शोधार्थियों के द्वारा अनेक विषय के सन्दर्भ में लगभग सभी स्तरों पर अध्ययन किया गया है। किन्तु शोधकर्त्री को अपने जैसा अध्ययन देखने को नहीं मिला। अतः शोधकर्त्री ने ''चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयो की सह–शैक्षिक

क्रियाओ का अध्ययन'' शोध के द्वारा विद्यालयों की सह शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहती है। अतः प्रस्तुत शोध का अध्ययन करना प्रासंगिक एवं औचित्यपूर्ण है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन– अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य सम्बन्धित क्षेत्र से अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है। मानव की इसी प्रवृति के फलस्वरूप ज्ञान की अजस् धारा प्रवाहित हुई है तथा सदियों से इसका एक क्रम चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया अनन्त है। जब तक धरा पर मानव जीवन है उसकी यह ज्ञान पिपासा कभी समाप्त नहीं होगी। क्या हो, कैसा हो, कैसा होना चाहिए? इन प्रश्नों से घिरा मानव जीवन सदैव जिज्ञासु रहता है। उसकी इस जिज्ञासा ने सदैव ही कल के ज्ञान को नया कलेवर प्रदान किया है। उसमें जहाँ कभी उसे अधुरा लगा है। उसे पूरा करने का प्रयास किया है, उसे संवारा है, सुधारा है, आगे बढ़ाया है और यह सब सम्पन्न हुआ है, अनुसंधान के माध्यम से वर्तमान एवं भावी अनुसंधान इसी प्रकार विभिन्न रूप से एक दूसरे से जुड़े हैं। पूर्व संचित ज्ञान एवं पूर्व में सम्पन्न हुई अनुसंधानों की पृष्ठभूमि में ही नये अनुसंधान की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ जन्म लेती है। प्रत्येक शोधकार्य की आधारशिला पूर्व संचित ज्ञान एवं पूर्व सम्पादित अनुसंधान ही होते है। प्रत्येक क्षेत्र में इस ज्ञान राशि का भण्डार बहुत बड़ा है। उसकी जानकारी प्रत्येक शोधकर्ता के लिए आवश्यक होती है, अतः अनुसन्धान की समस्या का अन्तिम रूप से चयन अनुसन्धान क्रिया की सबसे पहली सीढ़ी सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं उसकी समीक्षा है।

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान की प्राप्ति प्रभावपूर्ण तभी हो कती है, जब उस क्षेत्र से सम्बन्धित सन्दर्भ सामग्री का अध्ययन भली–भाँति हो सके। तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक कि उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का आधार उस विचरण में न हो।

शोध समस्या कथन– ''चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयो की सह–शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य–

1. चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. चुरू जिले के प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. चुरू जिले के निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

8. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
10. चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
11. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
12. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
13. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
14. चुरू जिले के ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
15. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
16. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
17. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
18. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
19. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
20. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
21. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
22. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ– शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैः–

1. चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. चुरू जिले के प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. चुरू जिले के निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14. चुरू जिले के ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
15. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
16. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
17. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
18. चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
19. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
20. चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

21. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
22. चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध लेख ''चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयो की सह–शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन'' में शोध लेख प्रविधि में **सर्वेक्षण प्रविधि** प्रयोग किया जायेगा ।

चर– प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न चर हैं–

राजकीय प्राथमिक विद्यालय,निजी प्राथमिक विद्यालय, सह–शैक्षिक क्रियाएँ।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। अतः शिक्षक व विद्यार्थी प्रस्तुत शोध की जनसंख्या होगी।

न्यादर्श का चयन– शोधकर्त्री ने न्यादर्श हेतु चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों व 100 शिक्षको का चयन यादृच्छिक प्रणाली से किया गया है। जिसका निरूपण निम्न प्रकार है :–

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी परीक्षण

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना 1– चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	100	249.62	3.02	51.86	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	100	211.24	6.71		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 198

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 1.1 में चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 249.62 एवं मानक विचलन 3.02 प्राप्त हुआ तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 211.24 एवं मानक विचलन 6.71 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 पर टी का मान 51.86 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के राजकीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2– चुरू जिले के प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
प्राथमिक विद्यालय के बालक	100	229.63	20.35	0.57	दोनों स्तर पर स्वीकृत
प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	100	231.23	19.56		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 198

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 1.2 में चुरू जिले के प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 229. 63 एवं मानक विचलन 20.35 प्राप्त हुआ तथा प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 231.23 एवं मानक विचलन 19.56 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 पर टी का मान 0.57 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3– चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.3

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत

			(S.D.)		
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	251.58	2.59	44.02	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	209.32	6.24		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.3 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 251.58 एवं मानक विचलन 2.58 प्राप्त हुआ तथा शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 209.32 एवं मानक विचलन 6. 24 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 44.02 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 4– चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.4

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	50	249.14	2.96	1.60	दोनों स्तर पर स्वीकृत
राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	50	250.10	3.03		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.4 में चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 249.14 एवं मानक विचलन 2.96 प्राप्त हुआ तथा राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 250.10 एवं मानक विचलन 3.03 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के

अंश 98 पर टी का मान 1.60 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 1.5

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	50	210.12	7.18	1.68	दोनों स्तर पर स्वीकृत
निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	50	212.36	6.07		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.5 में चुरू जिले के निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 210.12 एवं मानक विचलन 7.18 प्राप्त हुआ तथा निजी प्राथमिक विद्यालय की बालकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 212.36 एवं मानक विचलन 6.07 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 1.68 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 6– चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.6

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	247.66	1.97	35.20	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	213.16	6.67		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.6 में चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 247.66 एवं मानक विचलन 1.97 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 213.16 एवं मानक विचलन 6.67 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 35.20 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 7– चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.7

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	251.58	2.59	8.52	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	247.66	1.97		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.7 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 251.58 एवं मानक विचलन 2.59 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 247.66 एवं मानक विचलन 1.97 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 8.52 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 8– चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.8

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	209.32	6.24	2.98	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी	50	213.16	6.67		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.8 में चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 209.32 एवं मानक विचलन 6.24 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 213.16 एवं मानक विचलन 6. 67 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 2.98 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 9– चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.9

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	50	249.14	2.96	35.47	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	50	210.12	7.18		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.9 में चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की

सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 249.14 एवं मानक विचलन 2.96 प्राप्त हुआ तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 210.12 एवं मानक विचलन 7.18 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 35.47 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 10– चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.10

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	50	250.10	3.03	39.31	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	50	212.36	6.07		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1.10 में चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 250.10 एवं मानक विचलन 3.03 प्राप्त हुआ तथा निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 212.36 एवं मानक विचलन 6.07 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 39.31 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1. 98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 11– चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.11

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी राजकीय प्राथमिक	25	251.12	2.20	1.26	दोनों स्तर

विद्यालय के बालक					पर
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	252.04	2.89		स्वीकृत

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.11 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 251.12 एवं मानक विचलन 2.20 प्राप्त हुआ तथा शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 252.04 एवं मानक विचलन 2.89 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 1.26 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 12– चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.12

समूह (Group)	**संख्या (N)**	**मध्यमान (M)**	**मानक विचलन (S.D.)**	**टी–परीक्षण (t)**	**स्वीकृत / अस्वीकृत**
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	247.16	2.19	1.85	दोनों स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	248.16	1.60		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.12 में चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 247.16 एवं मानक विचलन 2.19 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 248.16 एवं मानक विचलन 1.60 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 1.85 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 13– चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.13

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	207.84	6.66	1.71	दोनों स्तर पर स्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	210.80	5.52		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.13 में चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 207.84 एवं मानक विचलन 6.66 प्राप्त हुआ तथा शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 210.80 एवं मानक विचलन 5.52 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 1.71 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 14– चुरू जिले के ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.14

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	212.40	7.07	0.80	दोनों स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	213.92	6.29		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.14 में चुरू जिले के ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 212.40 एवं मानक विचलन 7.07 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 213.92 एवं मानक विचलन 6.29 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 0.80 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 15– चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.15

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	251.12	2.20	30.91	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	207.84	6.66		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.15 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 251.12 एवं मानक विचलन 2.20 प्राप्त हुआ तथा शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 207.84 एवं मानक विचलन 6.66 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 30.91 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 1.16

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	252.04	2.89	32.99	दोनों स्तर पर

शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	210.80	5.52		अस्वीकृत

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.16 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 252.04 एवं मानक विचलन 2.89 प्राप्त हुआ तथा शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 210.80 एवं मानक विचलन 5.52 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 32.99 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 17– चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.17

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	247.16	2.19	23.49	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	212.40	7.07		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.17 में चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 247.16 एवं मानक विचलन 2.19 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 212.40 एवं मानक विचलन 7.07 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 23.49 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 18– चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.18

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	248.16	1.60	26.34	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	213.92	6.29		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.18 में चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 248.16 एवं मानक विचलन 1.60 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 213.92 एवं मानक विचलन 6.29 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 26.34 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 19– चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.19

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	251.12	2.20	6.39	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	247.16	2.19		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.19 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 251.12 एवं मानक विचलन 2.20 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 247.16 एवं मानक विचलन 2.19 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 6.39 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 20– चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.20

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	252.04	2.89	5.88	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाएं	25	248.16	1.60		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.20 में चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 252.04 एवं मानक विचलन 2.89 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 248.16 एवं मानक विचलन 1.60 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 5.88 प्राप्त हुआ। जो 0. 05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 21– चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.21

स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक	टी–परीक्षण	स्वीकृत /

(Group)	(N)	(M)	विचलन (S.D.)	(t)	अस्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	207.84	6.66	2.35	0.01 स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के बालक	25	212.40	7.07		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.21 में चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 207.84 एवं मानक विचलन 6.66 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 212.40 एवं मानक विचलन 7.07 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 2.35 प्राप्त हुआ। जो 0.05 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 से अधिक एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.68 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.01 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 22– चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.22

स्मूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं	25	210.80	5.52	1.87	दोनों स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं	25	213.92	6.29		

0.05 स्तर पर टी का मान = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.68

तालिका संख्या 1.22 में चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 210.80 एवं मानक विचलन 5.52 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मध्यमान 213.92 एवं मानक

विचलन 6.29 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 48 पर टी का मान 1.87 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः परिकल्पना "चुरू जिले के शहरी निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं ग्रामीण निजी प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष– किसी भी शोध अध्ययन के सम्पूर्ण होने पर निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता के सामने कुछ परिणाम निष्कर्ष के रूप में निकलकर आते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में निम्न तथ्य प्राप्त हुये हैं– वर्तमानकालीन शिक्षा पद्धति में सहशैक्षिक क्रियाओं की बहुत आवश्यकता हैं। क्योंकि इनके माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक,सामाजिक विकास किया जा सकता हैं। शिक्षको के द्वारा सहशैक्षिक गतिविधियों का संचालन सुचारू रूप से करने से विद्याथियों में अद्भूत परिवर्तन देखा जा सकता हैं। गायत्री मंत्र एक परिपूर्ण व शक्तिशाली मंत्र हैं सहशैक्षिक क्रियाओं क माध्यम से विद्यार्थी पूर्ण सफलता को प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकता है। विद्यार्थी में विवेक, निर्मलता, संयम आदि सद्गुणों का विकास होता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. अरोडा, रीता एवं मारवाह सुदेश ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'' 23, भगवानदास मार्केट, चौडा रास्ता, जयपुर।
2. भटनागर, ए. बी., भटनागर मीनाक्षी (2004) ''शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान'' आर लाल. बुक डिपों, मेरठ, चतुर्थ संस्करण।
3. भटनागर, सुरेश (1993) ''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'' इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ, चतुर्थ संस्करण।
4. डोडियाल सच्चिदानन्द (1982) ''अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्य अकादमी, जयपुर।
5. शर्मा, सी.एल.''सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण पद्वतियाँ'', राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी, जयपुर, संस्करण–2008
6. मंगल आशु ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ व शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
7. सिंधी, सिराज अहमद (1986) : "An survey of extra curricular activates in Udaipur high school."
8. आगरकर, आर.पी. (1988) : ''लोक नृत्य और शारीरिक शिक्षा की पाठ्येत्तर क्रियाओं में भूमिका''
9. शर्मा, गजेन्द्र पाल (2001) : "An Investigation in the provisions made for co-curricular activities in high adn higher secondary schools for boys and girls of Bikaner division."
10. दोसी, डॉ. प्रवीण (2002) : "जनजाति विद्यार्थियों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा मूल्य पोषण की स्थिति का अध्ययन"